चेतना-स्वरूप शिव काटते हैं कर्म बंधन

ज्योतिषाचार्या
पद्मजा शर्मा

भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में भगवान शिव को केवल एक देवता के रूप में नहीं, बल्कि चेतना, परिवर्तन, तपस्या, वैराग्य और मोक्ष के व्यापक प्रतीक के रूप में देखा जाता है. वैदिक और उत्तरवैदिक परम्पराओं में शिव के अनेक स्वरूप- रुद्र, महाकाल, पशुपति, त्र्यम्बक, दक्षिणामूर्ति, नटराज, अर्धनारीश्वर और भैरव- मानव जीवन के विभिन्न आयामों को अभिव्यक्त करते हैं. इसी कारण ज्योतिषीय दृष्टि से शिव को किसी एक ग्रह अथवा किसी एक राशि तक सीमित करना उनके व्यापक आध्यात्मिक स्वरूप को संकुचित कर देना होगा. शिव का ग्रहों से सम्बन्ध मुख्यत: उनके विभिन्न गुणों, प्रतीकों और जीवन में सक्रिय होने वाली शक्तियों के माध्यम से समझा जा सकता है.

ज्योतिष में ग्रह केवल आकाश में गतिशील खगोलीय पिण्ड नहीं हैं. भारतीय ज्योतिषीय परम्परा में वे जीवन की विभिन्न शक्तियों, प्रवृत्तियों और कर्मानुभवों के प्रतीक भी हैं. सूर्य आत्मतेज और आत्मचेतना का, चन्द्रमा मन और भावनाओं का, मंगल शक्ति और साहस का, बुध बुद्धि और वाणी का, बृहस्पति ज्ञान और धर्म का, शुक्र प्रेम और सौन्दर्य का, शनि कर्म और समय का तथा राहु-केतु आसक्ति, परिवर्तन, वैराग्य और आध्यात्मिक अनुभवों के प्रतीक माने जाते हैं. भगवान शिव के विभिन्न स्वरूपों में इन सभी शक्तियों के साथ प्रतीकात्मक साम्य देखा जा सकता है.

इस दृष्टि से शिव और ज्योतिष का सम्बन्ध किसी एक ग्रह को प्रसन्न करने तक सीमित नहीं है. शिव का व्यापक अर्थ उस चेतना से है जो ग्रहों द्वारा संकेतित जीवन-अनुभवों को देखती, स्वीकार करती और अन्तत: उनसे ऊपर उठने का मार्ग खोजती है. ग्रह कर्म के क्षेत्र का संकेत देते हैं, जबकि शिव उस चेतना का प्रतीक हैं जो कर्म के बन्धन से मुक्ति की दिशा में ले जाती है.

सूर्य और रुद्र : आत्मतेज का शोधन- सूर्य ज्योतिष में आत्मा, तेज, पिता, अधिकार, नेतृत्व, प्रतिष्ठा और जीवन-शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है. भगवान शिव का रुद्र स्वरूप सूर्य की प्रचण्ड शक्ति के साथ एक गहरा प्रतीकात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है. रुद्र का अर्थ केवल विनाशकारी शक्ति नहीं है; वह ऐसी शक्ति है जो जड़ता, अज्ञान और अहंकार को तोड़कर नये रूप का निर्माण करती है. सूर्य व्यक्ति के भीतर आत्मविश्वास और स्वत्व की भावना को विकसित करता है, किन्तु जब यही शक्ति असंतुलित होती है तो अहंकार, अधिकार-भाव और आत्मकेन्द्रितता के रूप में भी प्रकट हो सकती है. शिव का रुद्र स्वरूप इस अहंकार के शोधन का प्रतीक माना जा सकता है. शिव का तीसरा नेत्र उस ज्ञान का प्रतीक है जो बाहरी अहंकार के पीछे छिपे सत्य को देखता है. इस प्रकार सूर्य और शिव का सम्बन्ध व्यक्ति के भीतर स्थित प्रकाश को केवल बाहरी प्रतिष्ठा में नहीं, बल्कि आत्मबोध में रूपान्तरित करने की प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है.

चन्द्रमा और सोमेश्वर : मन की शान्ति- चन्द्रमा मन, भावनाओं, स्मृति, कल्पना, मातृत्व और मानसिक संवेदनशीलता का कारक माना जाता है. भगवान शिव के मस्तक पर सुशोभित अर्धचन्द्र उनके सोमेश्वर स्वरूप की ओर संकेत करता है. चन्द्रमा की कलाएँ परिवर्तनशील हैं और मानव मन भी उसी प्रकार निरन्तर बदलता रहता है.

शिव के मस्तक पर स्थित चन्द्रमा एक गहरा प्रतीक प्रस्तुत करता है—मन को नष्ट करना नहीं, बल्कि उसे चेतना के अधीन करना. शिव ध्यानस्थ हैं, किन्तु उनके मस्तक पर चन्द्रमा गतिशीलता और परिवर्तनशीलता का प्रतीक बनकर स्थित है. इससे यह संकेत मिलता है कि आध्यात्मिक साधना का उद्देश्य भावनाओं का दमन नहीं, बल्कि उनके प्रति जागरूकता और संतुलन विकसित करना है. इसी कारण चन्द्रमा से सम्बन्धित मानसिक अशान्ति, भावनात्मक अस्थिरता अथवा अत्यधिक चंचलता के संदर्भ में शिव-उपासना को भारतीय धार्मिक परम्परा में विशेष स्थान प्राप्त हुआ है.

मंगल और वीरभद्र : शक्ति का अनुशासन- मंगल ऊर्जा, साहस, संघर्ष, भूमि, पराक्रम और शारीरिक शक्ति का ग्रह है. शिव का वीरभद्र स्वरूप मंगल की योद्धा-शक्ति से प्रतीकात्मक रूप से जुड़ा हुआ दिखाई देता है.मंगल की ऊर्जा व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति देती है, किन्तु असंतुलित होने पर वही ऊर्जा क्रोध, आक्रामकता और संघर्ष में परिवर्तित हो सकती है. वीरभद्र की कथा शक्ति के इसी उग्र पक्ष को दर्शाती है. शिव के माध्यम से मंगल की ऊर्जा को केवल युद्ध या संघर्ष के रूप में नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध साहस, आत्मसंयम और उद्देश्यपूर्ण कर्म के रूप में समझा जा सकता है. इस दृष्टि से शिव साधना मंगल की ऊर्जा को विनाशकारी आवेग से रचनात्मक शक्ति ओर मोड़ने का प्रतीक बनती है.

बुध और दक्षिणामूर्ति : ज्ञान की मौन भाषा- बुध बुद्धि, वाणी, तर्क, विश्लेषण, संचार और सीखने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है. भगवान शिव का दक्षिणामूर्ति स्वरूप ज्ञान और गुरु-तत्त्व का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीक है. दक्षिणामूर्ति को उस गुरु के रूप में देखा जाता है जो मौन के माध्यम से ज्ञान प्रदान करते हैं. यह प्रतीक बताता है कि वास्तविक ज्ञान केवल शब्दों और सूचनाओं का संग्रह नहीं है. ज्ञान का गहरा स्तर वह है जिसमें व्यक्ति स्वयं सत्य का अनुभव करता है. ज्योतिषीय दृष्टि से बुध की विश्लेषणात्मक बुद्धि और शिव के दक्षिणामूर्ति स्वरूप के बीच यही सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है. बुध प्रश्न पूछता है, तर्क करता है और समझने का प्रयास करता है; दक्षिणामूर्ति उस ज्ञान की ओर संकेत करते हैं जहाँ विचार से आगे बढ़कर अनुभूति का क्षेत्र प्रारम्भ होता है.

बृहस्पति और आदिगुरु : धर्म एवं ब्रह्मविद्या- बृहस्पति गुरु, धर्म, ज्ञान, वेद, आस्था, सदाचार और आध्यात्मिक विस्तार का कारक है. शिव का दक्षिणामूर्ति स्वरूप केवल बुध की बुद्धि से ही नहीं, बल्कि बृहस्पति के गुरु-तत्त्व से भी सम्बन्धित है.भारतीय परम्परा में शिव को आदिगुरु कहा जाता है.

शनि और महाकाल : कर्म और समय का रहस्य

शनि कर्म, समय, अनुशासन, विलम्ब, उत्तरदायित्व, संघर्ष और कर्मफल का प्रमुख प्रतीक है. भगवान शिव का महाकाल स्वरूप शनि के साथ सबसे गहरे प्रतीकात्मक सम्बन्धों में से एक प्रस्तुत करता है. शनि व्यक्ति को उसके कर्मों के परिणाम का सामना कराता है. वह जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ ला सकता है जिनमें धैर्य, जिम्मेदारी और आत्मानुशासन की आवश्यकता होती है. महाकाल इस पूरे कर्म-चक्र के ऊपर स्थित उस सत्ता का प्रतीक हैं जो स्वयं समय से परे है. इसीलिए शनि की कठिन अवधि को केवल दुर्भाग्य की अवधि के रूप में देखना भारतीय आध्यात्मिक दृष्टि से अधूरा होगा. कठिन समय व्यक्ति को अपनी सीमाओं, कर्मों और जीवन की वास्तविक प्राथमिकताओं को देखने के लिए बाध्य कर सकता है. शिव का महाकाल स्वरूप इसी अनुभव को आध्यात्मिक अर्थ प्रदान करता है.

राशिफल

दिनांक- 23 से 29 अगस्त 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य सिंह राशि में, मंगल मिथुन राशि में, बुध सिंह राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र कन्या राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा धनु मकर कुम्भ और मीन राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 25 को चित्रायां शुक्र के प्रभाव से जीरा, गुड, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, जौ, चना, चावल, ऊन, रूई, सूत, सोना, तांबा, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, घी में तेजी रहेगी.

पर्व-व्रत-त्योहार :

रविवार	23अगस्त को	पुत्रदा पवित्रा एकादशी व्रत,
सोमवार	24 अगस्त को	श्रावण सोमवार व्रत, महाकाल सवारी उज्जैन, पवित्रा रोपण,
मंगलवार	25 अगस्त को	मंगला गौरी व्रत, प्रदोष व्रत,
गुरूवार	27 अगस्त को	पूर्णिमा व्रत, ह्यग्रीव जयंती,
शुक्रवार	28 अगस्त को	रक्षाबंधन, श्रावणी पूर्णिमा, नारियल पूनम, अमरनाथ यात्रा,
शनिवार	29 अगस्त को	अशून्य शयन व्रत,

मेष

बना बनाया काम बिगड़ता नजर आयेगा, किन्तु आपकी सूझबूझ एवं विनम्रता बुद्धिमत्ता से कार्य संभल जायेगा, हो सकता है, आप किसी की मदद भी ले सकते हैं, अपने कार्यों के प्रति आपको स्वयं ही लगन एवं रूचि लेना पड़ेगी, आर्थिक स्थिति में सामान्य की अपेक्षा आंशिक सुधार नजर आयेगा, निकट भविष्य में अच्छे लाभ की संभावना के योग बनते हैं.

वृषभ

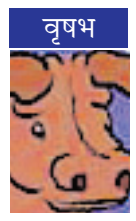

शैक्षणिक जीवन में प्रगतिशीलता बनी रहेगी, नौकरी में उत्साहवर्धक समाचार प्राप्त होने के योग हैं, जमिथुन जायजाद आदि के कार्यो में अनुकूलता रहेगी, प्रियजनों से संपर्क, मेलजोल बढेगा, पुरानी समस्याओं का सरलता से समाधान हो सकता है, कोई बहुप्रतीक्षित कार्य अचानक बनने का योग है, मान सम्मान में वृद्धि होगी.

मिथुन

आपका डूबता हुआ पैसा प्राप्त होने से मन में शांति और संतोष रहेगा, भूमि भवन जमिथुन जायजाद प्रापर्टी के कार्यो में अनुकूलता रहेगी, गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा, सट्टे के व्यापारी सावधानी रखें, नुकसान का भय है, मान प्रतिष्ठा पर नजर रखें, आपके सम्मान पर कोई व्यक्ति ऊंगली उठा सकता है, अत: जोखिम के कार्यो से बचें, वाहन का प्रयोग करते समय सावधानी रखें.

कर्क

सामाजिक कार्यो में परिश्रम की अधिकता रहेगी, उचित सफलता प्राप्त होने के योग हैं, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी, एकाधिक स्त्रोंतों में आमदानी के योग हैं, जमिथुन जायजाद में उलझनों का सामना करना पड़ सकता है, परन्तु सारी समस्यों का समाधान भी प्राप्त होगा, सप्ताहान्त में निवास की समस्या का हल होने से मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी.

सिंह

इष्ट मित्रों के समर्थन से किसी विशेष उपलब्धि की संभावना है, नौकरी में विशेष प्रसन्नता रहेगी, वायदे के कार्य व्यापार में सावधानी रखें, अन्यथा हानि की संभावना है, अनुबंधों का उचित लाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा, किसी हितचिन्तक से विचार विमर्श कर लें, रचनात्मक कार्यो से लाभ होगा, कार्य शक्ति का विकास होगा.

कन्या

चिरपरिचित व्यक्तियों से मेल मुलाकात का योग है, आपसी लोगों का सहयोग रहेगा, प्रतियोगी परीक्षाओं में विशेष ध्यान दें, स्थिति को देखकर कार्य करें, जमिथुन जायजाद संबंधी समस्याओं का सरलता से समाधान होगा, सप्ताह के मध्य यात्रा के कारण परेशानी हो सकती है. पारिवारिक जीवन सुखद एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में व्यतीत होगा.

तुला

आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी, राजकीय क्षेत्रों में परेशानी आ सकती है, नौकरी में पदोन्नति अथवा जबावदारी के कार्य सामने आने के योग हैं, व्यापारिक क्षेत्रों में प्रगति होगी, बिगड़ा हुआ कार्य बनने का योग है, पुराना पैसा प्राप्त होगा, अथवा गुमी वस्तु मिलने का योग है, निकटस्थ सहयोगियों का अच्छा सहयोग मिलेगा, सप्ताह के बीच थोड़ा बहुत व्यवधान आ सकता है.

वृश्चिक

खर्च की अधिकता रहेगी, अचानक आपको पैसे की व्यवस्था करना पड़ सकती है, मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, पारिवारिक उत्तरदायित्व पूरा करना पड़ेगा, नई जिम्मेदारियों को सम्भालने में असमर्थता महसूस कर सकते हैं, राजनैतिक व्यक्तियों से संरक्षण प्राप्त हो सकता है, आर्थिक मदद मिलने का योग है, शारीरिक कमजोरी संभव है.

धनु

परिवार के पूज्य व्यक्ति से स्वास्थ्य को लेकर परेशानी रह सकती है, महिला जाति की सलाह उपयोगी रहेगी, कुछ आकस्मिक परिवर्तन भी हो सकते हैं, कोई भी कार्य अड़चन के बिना पूरा नहीं होगा, जहां तक बने अपने कार्यो को स्वत: पूरा करने का प्रयास करें, तभी आपको सफलता मिल सकती है, परोपकारी भावनाओं पर नियंत्रण रखकर कार्य करें.

मकर

राजकीय क्षेत्र में विशेष सफलता के योग हैं, कुछ नये आर्थिक समीकरण बनने का योग है, जमिथुन जायजाद संबंधी कार्यो में अनुकूलता रहेगी, उत्साहवर्धक शुभ समाचार मिलने के योग हैं, नौकरी में उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा, व्यवसायिक क्षेत्र में प्रगति होगी, सामाजिक कार्यो में सफलता मिलेगी, शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी.

कुम्भ

इष्ट मित्रों के सहयोग से आपके महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे, संतान के दायित्वों की पूर्ति होगी, बिना मेहनत से नुकसान का कारण बन सकता है, वास्ते इस ओर सावधानी रखें, जो लोग वायदे का कार्य करते हैं, वे सावधानी रखें, ठेकेदारी आदि क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों को परेशानी हो सकती है, सावधानी बांछनीय है, आर्थिक स्थिति में संतुलन बनाये रखने हेतु प्रयास सार्थक होंगे.

मीन

सामाजिक कार्यो में विशेष रूचि रहेगी, आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी, कहीं से मदद मिलने के योग हैं, भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी, जमिथुन, जायजाद, के कार्यो में प्रगति का योग है, विरोधियों का पराभव होगा, साहसिक कार्यो के प्रति अभिरूचि बढ़ेगी, विविध समस्याओं का समाधान होगा, सप्ताह के उत्तरार्ध में अचानक लाभ की संभावना है, सुखद यात्रा होगी.

आज पवित्रा एकादशी

दीर्घायु और मोक्ष की प्राप्ति के लिए रखा जाएगा व्रत

पवित्रा एकादशी को लेकर इस साल श्रद्धालुओं के बीच असमंजस है कि व्रत 23 अगस्त को रखा जाएगा या 24 अगस्त को. पंचांग और संप्रदाय के अनुसार इस बार दोनों तारीखों पर एकादशी व्रत रखा जा सकता है.

एकादशी तिथि 23 अगस्त की रात करीब 2 बजे शुरू होकर 24 अगस्त की सुबह 4:18 बजे तक रहेगी. तिथि की अवधि को देखते हुए सामान्य गृहस्थ और स्मार्त संप्रदाय के श्रद्धालु 23 अगस्त 2026, रविवार को व्रत रखेंगे. वहीं वैष्णव संप्रदाय में दीक्षित श्रद्धालु 24 अगस्त 2026, सोमवार को एकादशी व्रत रखेंगे. इसलिए दोनों तारीखों को लेकर भ्रमित होने की जरूरत नहीं है. आपका संप्रदाय और पालन की जाने वाली परंपरा तय करेगी कि व्रत किस दिन रखा जाए.

पवित्रा एकादशी को धार्मिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है. इसे पुत्रदा एकादशी भी कहा जाता है. मान्यता है कि श्रद्धा और विधि-विधान से भगवान विष्णु की पूजा करने और व्रत रखने से पापों से मुक्ति, दीर्घायु और मोक्ष की प्राप्ति होती है. संतान सुख की इच्छा रखने वाले दंपतियों के लिए भी इस एकादशी का विशेष महत्व बताया गया है. धार्मिक मान्यता के अनुसार, भगवान विष्णु की आराधना और व्रत करने से उत्तम संतान की प्राप्ति का आशीर्वाद मिलता है. वहीं संतान की लंबी आयु और उसके कष्टों के निवारण के लिए भी लोग यह व्रत करते हैं.ऐसे करें भगवान विष्णु की पूजा

एकादशी के दिन सुबह स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें और भगवान विष्णु तथा माता लक्ष्मी का ध्यान करें. इसके बाद विधि-विधान से पूजा करें. भगवान को पीले फूल, फल और नैवेद्य अर्पित कर सकते हैं. इस दिन 'ऊं नमो वासुदेवाय' मंत्र का जाप करना भी शुभ माना गया है.

धार्मिक मान्यता के अनुसार एकादशी पर सात्विक आहार लेना, नशे से दूर रहना, क्रोध और अपशब्दों से बचना तथा भगवान विष्णु का नाम-जप और भजन-कीर्तन करना चाहिए. जरूरतमंदों और ब्राह्मणों को भोजन कराने तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान-दक्षिणा देने की भी परंपरा है.

तिथि के फेर में पूर्णिमा, 28 को रक्षा बंधन

रक्षाबंधन को लेकर इस बार लोगों के बीच काफी असमंजस है कि राखी का त्योहार 27 अगस्त को मनाया जाएगा या 28 अगस्त को. दरअसल, सावन पूर्णिमा तिथि 27 अगस्त से शुरू होकर 28 अगस्त की सुबह तक रहेगी. इसी वजह से तारीख को लेकर भ्रम की स्थिति बनी हुई है. पंडित प्रवीण मिश्र के अनुसार, इस साल रक्षाबंधन का पर्व 28 अगस्त 2026, शुक्रवार को मनाना उचित रहेगा.

सावन मास की पूर्णिमा तिथि 27 अगस्त को सुबह 9:08 बजे शुरू होगी और 28 अगस्त को सुबह 9:48 बजे समाप्त होगी. ऐसे में उदय तिथि को महत्व देते हुए रक्षाबंधन 28 अगस्त को मनाया जाएगा.

इस बार खास बात यह भी है कि 28 अगस्त को चंद्र ग्रहण पड़ रहा है, लेकिन रिपोर्ट के अनुसार यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा. इसलिए भारत में रक्षाबंधन के पर्व और राखी बांधने के

समय पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं माना जा रहा है. राखी बांधने का शुभ मुहूर्त 28 अगस्त को पूर्णिमा तिथि सुबह 9:48 बजे तक रहेगी. इसलिए सुबह 6:24 बजे से 9:48 बजे तक राखी बांधना शुभ बताया गया है. अगर किसी कारण से सुबह का समय निकल जाए तो दोपहर 12:01 बजे से 1:05 बजे तक अभिजीत मुहूर्त में भी राखी बांधी जा सकती है. इस बार नहीं रहेगा भद्रा का साया

रक्षाबंधन पर भद्रा को लेकर भी लोगों के मन में चिंता रहती है. इस साल भद्रा 27 अगस्त को सुबह 9:08 बजे से रात 9:32 बजे तक रहेगी. चूंकि रक्षाबंधन 28 अगस्त को मनाया जाएगा, इसलिए उस दिन भद्रा का प्रभाव नहीं रहेगा.

परंपरा के अनुसार राखी बांधते समय भाई का मुख पूर्व दिशा की ओर होना शुभ माना जाता है. इसके बाद बहन भाई के माथे पर तिलक और अक्षत लगाए, आरती उतारे और फिर राखी बांधे. रक्षासूत्र बांधते समय पारंपरिक मंत्र का उच्चारण भी किया जा सकता है. अंत में भाई-बहन एक-दूसरे की सुख-समृद्धि और लंबी उम्र की कामना करें.

गोमती चक्र रखने से आती है सुख-समृद्धि

गोमती चक्र को हिंदू धर्म और वास्तु परंपरा में शुभ और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है. मान्यता है कि इसे पर्स या धन रखने वाले स्थान पर रखने से आर्थिक समृद्धि और सौभाग्य आकर्षित होता है. कई लोग गोमती चक्र को माता लक्ष्मी से जोड़कर देखते हैं और इसे धन-संबंधी सकारात्मक ऊर्जा के लिए उपयोग करते हैं. हालांकि, ये धार्मिक और ज्योतिषीय मान्यताएं हैं, इनका वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है.

पर्स में गोमती चक्र रखने का तरीका अगर आप गोमती चक्र को पर्स में रखना चाहते हैं, तो परंपरा के अनुसार साफ-सुथरा और साबुत गोमती चक्र चुनें. इसे पर्स के ऐसे हिस्से में रखें जहां वह सुरक्षित रहे और अनावश्यक रूप से गिर न जाए. कुछ

मान्यताओं में शुक्रवार के दिन इसे पूजा के बाद पर्स में रखने की सलाह दी जाती है. आप इसे मां लक्ष्मी का स्मरण करते हुए श्रद्धा से रख सकते हैं. माने जाते हैं लाभ मान्यता के अनुसार गोमती चक्र को पर्स में रखने से धन के प्रति सकारात्मक सोच बढ़ती है, आर्थिक स्थिरता का भाव आता है और घर-परिवार में सुख-समृद्धि बनी रहती है. कुछ लोग इसे नकारात्मक ऊर्जा से बचाव और सौभाग्य के प्रतीक के रूप में भी रखते हैं. हालांकि, केवल गोमती चक्र रखने से धन अपने आप नहीं बढ़ता. आर्थिक सफलता के लिए मेहनत, सही वित्तीय योजना और खर्चों पर नियंत्रण भी जरूरी है.

गोमती चक्र को आस्था और परंपरा के रूप में अपनाएं, किसी निश्चित आर्थिक लाभ की गारंटी के रूप में नहीं. पर्स में इसे रखने के साथ अपने धन की सही योजना बनाना, अनावश्यक खर्चों से बचना और नियमित बचत करना अधिक महत्वपूर्ण है.

कपूर के उपाय से दूर होगी नकारात्मक ऊर्जा

वास्तु और धार्मिक मान्यताओं में कपूर को शुद्धता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है. मान्यता है कि कपूर का सही तरीके से इस्तेमाल करने से घर का वातावरण सकारात्मक बनता है और नकारात्मक ऊर्जा दूर करने में मदद मिलती है एक प्रचलित उपाय के अनुसार, रात के समय एक पीतल के लोटे में पानी भरकर उसमें कपूर रखा जाता है. इसे पूरी रात घर में रखने के बाद अगले दिन सुबह उस पानी का इस्तेमाल घर की चौखट और मुख्य प्रवेश द्वार के आसपास छिड़काव के लिए किया जाता है. मान्यता है कि इससे घर में मौजूद नकारात्मकता कम होती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है.

कुछ धार्मिक मान्यताओं में मुख्य द्वार को घर की ऊर्जा का प्रमुख स्थान माना जाता है. इसलिए चौखट पर पानी का छिड़काव विशेष रूप से शुभ माना जाता है. ऐसा कहा जाता है कि इससे घर में सुख-शांति बनी रहती है और धन-समृद्धि के लिए अनुकूल वातावरण तैयार होता है.

कई लोग इस उपाय को मां लक्ष्मी की कृपा और आर्थिक उन्नति से भी जोड़ते हैं. मान्यता है कि जब घर का वातावरण सकारात्मक रहता है तो धन संबंधी परेशानियां कम होने और समृद्धि आने की राह खुलती है. हालांकि, यह धार्मिक विश्वास है और कपूर या इस उपाय से अपने आप पैसा आने का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है.अगर आप यह उपाय श्रद्धा से करते हैं, तो घर की साफ-सफाई के साथ इसे करना अधिक उचित माना जाता है. मुख्य द्वार को साफ रखें और पूजा-पाठ या सकारात्मक विचारों के साथ इस उपाय को अपनाएं.

ध्यान रखें कि कपूर ज्वलनशील पदार्थ है, इसलिए इसे आग, बच्चों और पालतू जानवरों से दूर रखें. साथ ही, इस उपाय को आर्थिक सफलता की गारंटी न मानें. मेहनत, बचत और सही आर्थिक फैसलों के साथ सकारात्मक आस्था को जोड़ना ही बेहतर तरीका है.

मंगला गौरी व्रत से मिलेगा सुखी वैवाहिक जीवन

सावन के प्रत्येक मंगलवार को रखा जाने वाला मंगला गौरी व्रत देवी पार्वती के मंगल स्वरूप को समर्पित माना जाता है. धार्मिक मान्यता के अनुसार, यह व्रत सुहाग की रक्षा, पति की लंबी आयु और वैवाहिक जीवन में सुख-शांति के लिए विशेष फलदायी माना जाता है. कई स्थानों पर नवविवाहित महिलाएं विवाह के शुरुआती वर्षों में इस व्रत को विशेष रूप से करती हैं, जबकि अन्य महिलाएं भी इसे श्रद्धा और पारिवारिक परंपरा के अनुसार रखती हैं. अविवाहित लड़कियां भी अच्छे जीवनसाथी की कामना से यह व्रत कर सकती हैं.

मंगला गौरी व्रत की कथा- पौराणिक कथा के अनुसार, एक व्यापारी को लंबे समय बाद पुत्र की प्राप्ति हुई, लेकिन ज्योतिषी ने बताया कि उसके पुत्र के जीवन में कम उम्र में सर्पदंश का संकट

आएगा. बाद में उसका विवाह ऐसी कन्या से हुआ जिसकी माता ने वर्षों तक मंगला गौरी व्रत किया था. धार्मिक मान्यता है कि देवी के आशीर्वाद से उस कन्या को अखंड सौभाग्य का वरदान प्राप्त था. जब युवक पर संकट आया, तो उसकी पत्नी के सौभाग्य के प्रभाव से उसका जीवन बच गया. तभी से इस व्रत को पति की दीर्घायु और वैवाहिक सुख से जोड़कर देखा जाता है.

मंगला गौरी व्रत की पूजा विधि- व्रत रखने वाली महिलाएं सुबह स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करती हैं और पूजा स्थल की साफ-सफाई करती हैं. इसके बाद चौकी पर लाल या पीले रंग का कपड़ा बिछाकर कलश स्थापित किया जाता है और देवी मंगला गौरी की प्रतिमा या चित्र रखा जाता है. पूजा में देवी को 16 श्रृंगार की वस्तुएं अर्पित करने की परंपरा है. इसमें हल्दी, कुमकुम, चूड़ियां, दर्पण, कंघी, फूल, फल और मिठाई जैसी वस्तुएं शामिल की जा सकती हैं.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस व्रत से पति की लंबी आयु, दांपत्य जीवन में प्रेम और आपसी समझ तथा परिवार में सुख-शांति की कामना की जाती है. इसे अखंड सौभाग्य का आशीर्वाद पाने वाला व्रत भी माना जाता है. अविवाहित कन्याएं अच्छे और योग्य जीवनसाथी की कामना से यह व्रत रखती हैं .कुछ ज्योतिषीय मान्यताओं में मंगला गौरी व्रत को मंगल दोष और विवाह संबंधी बाधाओं से भी जोड़ा जाता है.